॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

श्रीरामोत्तरतापनीयोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रथम खण्ड

काशी एवं तारक-मन्त्रकी महिमा; ॐकाररूप पुरुषोत्तम रामके चार पाद

ॐ बृहस्पतिने याज्ञवल्क्यसे पूछा—'ब्रह्मन्! जिस तीर्थके सामने कुरुक्षेत्र भी छोटा लगे, जो देवताओंके लिये भी देव-पूजनका स्थान हो, जो समस्त प्राणियोंके लिये परमात्मप्राप्तिका निकेतन हो, वह कौन है?' यह प्रश्न सुनकर याज्ञवल्क्यने उत्तर दिया—'निश्चय ही अविमुक्त तीर्थ ही प्रधान कुरुक्षेत्र (सत्कर्मका स्थान) है। वही देवताओंके लिये भी देव-पूजाका स्थान है; वही समस्त प्राणियोंके लिये परमात्मप्राप्तिका निकेतन है। अतः जहाँ कहीं भी जाय, उस अविमुक्त तीर्थको ही प्रधान कुरुक्षेत्र माने। वही देवताओंके लिये भी देवाराधनका स्थान है। वही सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये परब्रह्मप्राप्तिका स्थान है। यहीं जीवके प्राण निकलते समय भगवान् रुद्र तारक-ब्रह्मका उपदेश करते हैं, जिससे वह अमृतमय होकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसलिये अविमुक्त (काशी)-का ही सेवन करे। अविमुक्त तीर्थका कभी परित्याग न करे। ठीक ऐसी ही बात है।' इस प्रकार याज्ञवल्क्यने समझाया॥ १॥

तदनन्तर भरद्वाजने याज्ञवल्क्यजीसे पूछा—'भगवन्! कौन तारक (तारनेवाला) है और कौन तरता है?' इस प्रश्नके उत्तरमें वे प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य मुनि बोले—'तारक-मन्त्र इस प्रकार होता है। दीर्घ आकारसहित अनल (रेफ, रकार) हो और वह रेफ बिन्दु (अनुस्वार)-से पहले स्थित हो; उसके बाद पुनः दीर्घ स्वरविशिष्ट रेफ हो और उसके अनन्तर '**माय नमः**' ये दो पद हों; इस प्रकार '**रां रामाय नमः**' यह तारक-मन्त्रका स्वरूप है। इसके सिवा '**राम**' पदके सहित '**चन्द्राय नमः**' और '**भद्राय नमः**' ये दो मन्त्र भी तारक ही हैं। ये तीन मन्त्र क्रमशः ॐकारस्वरूप, तत्स्वरूप और ब्रह्मस्वरूप हैं। ये ही क्रमशः 'सत्', 'चित्' और 'आनन्द' नाम धारण करते हैं। इस प्रकार इनकी उपासना करनी चाहिये। ॐकारमें प्रथम अक्षर अकार है, दूसरा अक्षर उकार है, तीसरा अक्षर मकार है, चौथा अक्षर अर्धमात्रा है, पञ्चम अक्षर अनुस्वार है और छठा अक्षर नाद है। (इस प्रकार छः अक्षरवाला तारक-मन्त्र होता है।) यह सबको तारनेवाला होनेसे तारक कहलाता है। उस ॐकार अथवा 'रां' इस बीज-मन्त्रमय अक्षरको ही तुम 'तारक ब्रह्म' समझो। वही उपासनाके योग्य है—यों जानना चाहिये। वह गर्भ, जन्म, जरावस्था, मृत्यु तथा सांसारिक महान् भयसे भलीभाँति तार देता है। इसलिये 'तारक' इस नामसे उसका कथन किया जाता है। जो ब्राह्मण इस तारक-मन्त्रका सदा जप करता है। वह सम्पूर्ण पापोंको पार कर जाता है, वह मृत्युको लाँघ जाता है, वह ब्रह्महत्यासे तर जाता है, वह भ्रूणहत्यासे तर जाता है तथा वह वीर-हत्यासे तर जाता है। इतना ही नहीं, वह सम्पूर्ण हत्याओंसे तर जाता है, वह संसारसे तर जाता है, सबको पार कर जाता है। वह जहाँ कहीं भी रहता हुआ अविमुक्त-क्षेत्र (काशीधाम)-में ही रहता है। वह महान् होता है, वह अमृतत्वको प्राप्त होता है॥ २॥

इस विषयमें ये श्लोक हैं—

अकाराक्षरसम्भूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः।
उकाराक्षरसम्भूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः॥
प्राज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसम्भवः।
अर्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः॥
श्रीरामसांनिध्यवशाज्जगदानन्ददायिनी ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहिनाम्॥
सा सीता भवति ज्ञेया मूलप्रकृतिसंज्ञिका।
प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिनः॥

"सुमित्रानन्दन लक्ष्मणजी प्रणवके अकार अक्षरसे प्रादुर्भूत हुए हैं। ये जाग्रत्के अभिमानी 'विश्व' के रूपमें भावना करनेयोग्य हैं। (ये ही चतुर्व्यूहोंमें संकर्षणरूप हैं।) शत्रुघ्न स्वप्नके अभिमानी 'तैजस' रूप हैं, इनका आविर्भाव प्रणवके 'उ' अक्षरसे हुआ है। (चतुर्व्यूहोंमें इन्हींकी 'प्रद्युम्न' संज्ञा है।) भरतजी सुषुप्तिके अभिमानी 'प्राज्ञ' रूप हैं। ये प्रणवके 'म' अक्षरसे प्रकट हुए हैं। (चार व्यूहोंमें इन्हींको 'अनिरुद्ध' कहा गया है।) भगवान् श्रीराम प्रणवकी अर्धमात्रारूप हैं। ये ही तुरीय पुरुषोत्तम हैं। ब्रह्मानन्द ही इनका एकमात्र विग्रह है। (चतुर्व्यूहोंमें ये ही 'वासुदेव' नामसे प्रसिद्ध हैं।) श्रीरामके सामीप्य मात्रसे जो सम्पूर्ण देहधारियोंकी उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाली हैं, वे जगदानन्ददायिनी विदेहनन्दिनी सीता नाद-बिन्दुस्वरूपा हैं। वे ही 'मूल प्रकृति' के नामसे जाननेयोग्य हैं। प्रणवसे अभिन्न होनेके कारण ही उन्हें ब्रह्मवादी जन 'प्रकृति' कहते हैं।"

'ओम्' यह अक्षर (अविनाशी परमात्मा) है। यह प्रत्यक्ष दीखनेवाला सम्पूर्ण जगत् उसका ही उपव्याख्यान है—उसीकी महिमाका प्रकाशन करनेवाला है। जो पहले हो चुका है, जो अभी वर्तमान है तथा जो भविष्यमें होनेवाला है, वह सम्पूर्ण जगत् ॐकार ही है, तथा जो ऊपर बताये हुए तीनों कालोंसे अतीत दूसरा कोई तत्त्व है, वह भी ॐकार ही है। (ॐकार नाम है और परमात्मा नामी, नाम और नामीमें कोई अन्तर नहीं है—यह दिखानेके लिये ही यहाँ सब कुछ ॐकार बताया गया है।) निश्चय ही यह सब ब्रह्म है। यह सर्वान्तर्यामी आत्मा भी ब्रह्म है। इस परमात्माके चार पाद हैं। (यद्यपि परमात्मा एक और अखण्ड है, तथापि उसके सम्पूर्ण स्वरूपका बोध करानेके लिये ही उसमें चार पादों—अंशोंकी कल्पना की गयी है। जाग्रत् यानी स्थूल जगत्, स्वप्न अर्थात् सूक्ष्म जगत्, सुषुप्ति—प्रलयावस्था अर्थात् कारणतत्त्वमें लीन जगत् तथा इन सबसे अतीत विशुद्ध ब्रह्म—ये ही समग्र परमेश्वरके चार पाद अथवा अंश हैं। श्रीरामतत्त्वके वर्णनमें 'रां' यह बीज ही प्रणव है तथा पुरुषोत्तम राम सम्पूर्ण परमेश्वर हैं। इनके चार पाद या अंश हैं—लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत तथा कौसल्यानन्दन श्रीराम। ये चारों मिलकर ही सम्पूर्ण राम हैं। जैसे सब कुछ 'ओम्' है, वैसे ही 'रां' भी है। 'रां' और 'ॐ' में माहात्म्य और महिमाकी दृष्टिसे कोई अन्तर नहीं है। अतः यह सम्पूर्ण जगत् श्रीरामकी ही महत्ताका प्रकाशन कर रहा है।)

जाग्रत्-अवस्थाकी भाँति यह सम्पूर्ण स्थूल जगत् जिसका अवयव-संस्थान (शरीर) है; जो बहिःप्रज्ञ है—जिसका ज्ञान इस बाह्य जगत्में सब ओर फैला हुआ है; भूः, भुवः आदि सात लोक ही जिसके सात अङ्ग हैं; पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच प्राण और चार अन्तःकरण—ये उन्नीस समष्टि करण ही जिसके मुख हैं; जो इस स्थूल जगत्का भोक्ता अर्थात् इसको जानने और अनुभव करनेवाला है—ऐसा वैश्वानर (विश्वरूप पुरुषोत्तम) ही सम्पूर्ण परमेश्वरका पहला पाद है। (लीलापुरुषोत्तम श्रीरामके चार पादोंमेंसे प्रथम पाद श्रीलक्ष्मणजी हैं। ये शेषनागके रूपमें अखिल विश्वके आश्रय होनेके कारण ही 'विश्व' अथवा 'वैश्वानर' नाम धारण करते हैं तथा श्रीरामकी प्राप्तिके लिये प्रथम उपाय है—श्रीलक्ष्मणजीकी आराधना। अतएव उन्हें प्रथम पाद कहा गया है। वे सदा जागरूक स्थितिमें रहते हैं, अतएव 'जागरितस्थान' हैं। बाहरकी सम्पूर्ण बातोंको जाननेमें सतत सावधान रहनेके कारण उन्हें 'बहिःप्रज्ञ' कहा गया है। भूर्भुवः आदि सात लोक अथवा तल-अतल आदि सात पातालोंकी स्थिति उनके ही अङ्गोंपर है; अतः वे 'ससाङ्ग' हैं। पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र; व्याकरण, ज्यौतिष, छन्द, कल्प, शिक्षा एवं निरुक्त—ये छः अङ्ग; ऋक्, साम, यजुः एवं अथर्व—ये चार वेद तथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र और दर्शन—ये सब मिलकर उन्नीस विद्याएँ श्रीलक्ष्मणजीके मुखमें स्थित हैं—अर्थात् अपने मुखद्वारा वे इन विद्याओंका वर्णन करनेमें समर्थ हैं; अतएव उन्हें 'एकोनविंशतिमुख' कहा गया है। संकर्षणरूपसे प्रलयकालमें अपनी मुखाग्निद्वारा समस्त

स्थूल जगत्को वे ग्रस लेते हैं, अतः स्थूलभुक् हैं।)

मनकी सूक्ष्म वासनाद्वारा कल्पित मनोमय जगत् ही स्वप्न कहलाता है; अतः 'स्वप्न' पद यहाँ 'सूक्ष्म जगत्' का ही बोधक है। वह सूक्ष्म जगत् ही जिसका स्थान है, जो अन्तःप्रज्ञ है अर्थात् जिसका ज्ञान सूक्ष्म जगत्में व्याप्त है तथा जो पूर्वोक्त सात अङ्गों और उन्नीस मुखोंसे युक्त है, वह प्रविविक्त—सूक्ष्म जगत्का भोक्ता (जगत्के सूक्ष्म तत्त्वोंका अनुभव करनेवाला) तैजस (प्रकाशस्वरूप हिरण्यगर्भ) उस पूर्णतम परमेश्वरका द्वितीय पाद है। (श्रीरामपक्षमें श्रीशत्रुघ्न ही पूर्णतम परमात्मा श्रीरामके द्वितीय पाद—अंश हैं। लक्ष्मणजीकी अपेक्षा दूसरे होनेके कारण ये द्वितीय हैं। प्रद्युम्न—कामके अंश होनेसे ये सबके मनमें स्थित रहते हैं। स्वप्नावस्थामें अन्य इन्द्रियोंके सुप्त हो जानेपर भी मन अपना कार्य करता रहता है, अतः मनके साथ उसमें निवास करनेवाले मनोभवरूप शत्रुघ्नजीकी भी स्वप्नमें स्थिति रहती ही है; इसलिये उनको 'स्वप्नस्थान' कहा गया है। मनमें स्थित होनेसे वे अन्तःकरणकी बातोंको जानते हैं, इसलिये अन्तःप्रज्ञ हैं। जैसे स्थूल जगत्का भार शेषरूपधारी लक्ष्मणपर है, उसी प्रकार सूक्ष्म लोकोंका भार समष्टि मनमें स्थित 'प्रद्युम्न'—कामपर है। समष्टि मन ही समस्त सूक्ष्म लोकोंका आधार है। उसमें रहनेवाले संकल्पमय प्रद्युम्न ही उस भारको वहन करते हैं। वे शत्रुघ्नसे अभिन्न हैं। अतः भूः आदि सात सूक्ष्म लोकोंका भार जिनके अङ्गोंपर है, वे शत्रुघ्नजी भी 'सप्ताङ्ग' हैं। उन्नीस मुख पूर्ववत् समझने चाहिये। जो सूक्ष्म लोकोंका अधिष्ठाता है, वह सूक्ष्म तत्त्वोंका भोक्ता और अनुभव करनेवाला होगा ही; अतः शत्रुघ्नजी ही 'प्रविविक्तभुक्' हैं। तैजसका अर्थ यहाँ तेजोमय—परम कान्तिमान् है। प्रद्युम्न—कामके स्वरूप होनेसे शत्रुघ्नका सौन्दर्य अप्रतिम है; अतः वे 'तैजस' कहे गये हैं।)

जिस अवस्थामें सोया हुआ मनुष्य किसी भी भोगकी कामना नहीं करता, कोई भी स्वप्न नहीं देखता, वह सुषुप्ति-अवस्था है। सुषुप्ति-अवस्थासे यहाँ प्रलयावस्थाकी ओर संकेत किया गया है। उस समय समस्त जगत् अपने कारणतत्त्वमें विलीन हो जाता है। अतः सुषुप्त अर्थात् कारणतत्त्व ही जिसका संस्थान (शरीर) है, जो एकरूप है, केवल घनीभूत प्रज्ञान ही जिसका स्वरूप है, जो केवल आनन्दमय है, चैतन्य ही जिसका मुख है, जो एकमात्र आनन्दका ही उपभोग करनेवाला है, वह 'प्राज्ञ' ही परब्रह्म परमात्माका तृतीय पाद है। (श्रीरामपक्षमें श्रीभरतलालजी ही तृतीय पाद हैं। लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी अपेक्षासे तो वे तृतीय हैं और श्रीरामकी प्राप्ति करानेवाले होनेके कारण [**श्रीरामं पादयति—गमयति इति पादः**, इस व्युत्पत्तिके अनुसार] 'पाद' कहे गये हैं। जहाँ इन्द्रियवर्ग और मन दोनों सो जाते हैं—दोनोंके अनियन्त्रित व्यापार बंद हो जाते हैं, उस शम-दमसे सम्पन्न स्थिरप्रज्ञताकी अवस्थाको ही यहाँ 'सुषुप्ति' कहा है। इसमें सुप्त अर्थात् जितेन्द्रिय पुरुष न तो स्थूल भोगोंकी इच्छा करता है और न स्वप्न—सूक्ष्म भोगोंकी ओर ही दृष्टि डालता है। इस जितेन्द्रियता एवं स्थिरप्रज्ञतामें ही स्थित होनेके कारण भरतजी 'सुषुप्त-स्थान' कहे गये हैं। उन्होंने भी पिताकी ओरसे स्वतः प्राप्त हुए राज्यकी कामना नहीं की—स्वप्नमें भी उसका चिन्तन नहीं किया। वे नन्दिग्राममें समाधि लगाकर भगवान्के साथ एकीभूत हो गये थे। यों भी सदा श्रीरघुनाथजीका ही चिन्तन करनेके कारण वे उनके साथ एकरूप हो गये थे। वे प्रज्ञानघन अर्थात् महाप्राज्ञ—परम बुद्धिमान् हैं श्रीरघुनाथजीका अनन्य भक्त होना ही बुद्धिके उत्कर्षका परिचायक है। हर्ष-शोक आदिसे विचलित न होनेके कारण वे सदा 'आनन्दमय' कहे गये हैं। अनिरुद्धस्वरूप होनेके कारण उन्हें आनन्दका भोक्ता कहा गया है। उनमें विवेकशक्तिकी प्रधानता होनेसे ही वे 'चेतोमुख' हैं। 'प्राज्ञ' उनकी संज्ञा है। परम ज्ञानी—कुशाग्र-बुद्धि होनेके कारण उनको 'प्राज्ञ' कहा गया है।)

यह तीन पादोंके रूपमें वर्णित परमेश्वर (एवं लीलापुरुषोत्तम श्रीराम) सबका ईश्वर (शासक) है। यह सबको जाननेवाला है। यही सबका अन्तर्यामी है। यही सम्पूर्ण जगत्का कारण है तथा यही सम्पूर्ण भूतोंकी उत्पत्ति, (स्थिति) और प्रलयका स्थान है। जिसकी प्रज्ञा न तो अन्तर्मुखी है न बहिर्मुखी है, न दोनों ओर मुखवाली ही है; जो न प्रज्ञानघन है, न जाननेवाला है, न नहीं जाननेवाला ही है; जिसको देखा नहीं गया, व्यवहारमें नहीं लाया जा सकता और पकड़ा भी नहीं जा सकता; जिसका कोई लक्षण नहीं है, जो चिन्तनमें नहीं आ सकता, जो किसी विशेष संकेतसे भी बतलानेमें नहीं आ सकता; एकमात्र आत्मसत्ताकी प्रतीति ही जिसका सार है तथा जिसमें प्रपञ्चका सर्वथा

अभाव है, ऐसे सर्वथा शान्त एवं कल्याणमय अद्वैत-तत्त्व (परब्रह्म)-को ही ज्ञानीजन समग्र परमेश्वरका चतुर्थ पाद मानते हैं। वह परमात्मा है और वही जाननेके योग्य है। (श्रीरामपक्षमें भी '**नान्तःप्रज्ञम्**' आदि पदोंका यही अर्थ है। यहाँ श्रुति अनिर्वचनीय एवं सर्वथा विलक्षण श्रीराम-तत्त्वका तटस्थभावसे संकेतमात्र करती है। स्वरूपतः वर्णन करनेमें तो वह सर्वथा असमर्थ है; क्योंकि वाणीकी वहाँतक पहुँच ही नहीं है।) वे पूर्ण ब्रह्म परमात्मा (श्रीराम) सदा उज्ज्वल (निर्मल यशसे प्रकाशमान) हैं। अविद्या और उसके कार्योंसे सर्वथा रहित हैं। अपने भक्तजनोंके आत्माका अज्ञानमय बन्धन वे हर लेते हैं। सर्वदा अद्वैत हैं—उनमें द्वैतका सर्वथा अभाव है। वे आनन्दमूर्ति हैं। सबके अधिष्ठान हैं। सत्तामात्र उनका स्वरूप है। अविद्याजनित अन्धकार और मोह उनमें स्वभावतः नहीं हैं अथवा उनकी शरणमें जाते ही अविद्यामय अन्धकार और मोहका सर्वथा नाश हो जाता है। ऐसे जो अनिर्वचनीय परमात्मा श्रीराम हैं, वह मैं ही हूँ—इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये। ॐ, तत्, सत्, यत् और परं ब्रह्म आदि नामोंसे प्रतिपादित होनेवाले जो चिन्मय श्रीरामचन्द्रजी हैं, वह मैं ही हूँ; ॐ—सच्चिदानन्दमय, परम ज्योतिःस्वरूप जो वे श्रीरामभद्र हैं, वह मैं हूँ, वह मैं ही हूँ—इस प्रकार अपनेको सामने लाकर मनके द्वारा परब्रह्म परमात्मा श्रीरामके साथ एकता करे—भगवान्‌के साथ अपनी अभिन्नताका चिन्तन करे।

जो लोग सदा यथार्थरूपसे समझकर 'मैं राम हूँ' यों कहते हैं, वे संसारी नहीं हैं। निश्चय ही वे श्रीरामके ही स्वरूप हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

यह उपनिषद् है। जो इस प्रकार जानता है, वह मुक्त हो जाता है—इस प्रकार याज्ञवल्क्यजीने उपदेश दिया॥ ३॥

तदनन्तर महर्षि अत्रिने इन सुप्रसिद्ध याज्ञवल्क्य मुनिसे प्रश्न किया—'यह जो अनन्त एवं अव्यक्त आत्मा (परमात्मा) है, इसे मैं कैसे जानूँ?'

तब वे प्रसिद्ध याज्ञवल्क्यजी बोले—उस अव्यक्त परमात्माकी अविमुक्त क्षेत्रमें उपासना करनी चाहिये। यह जो अनन्त एवं अव्यक्त आत्मा है, वह अविमुक्त क्षेत्रमें प्रतिष्ठित है।

प्रश्न—किंतु उस अविमुक्त क्षेत्रकी स्थिति कहाँ है?

उत्तर—अविमुक्त क्षेत्र वरणा और नाशीके मध्यमें प्रतिष्ठित है।

प्रश्न—'वरणा' नामसे कौन प्रसिद्ध है? और 'नाशी' किसका नाम है?

उत्तर—सम्पूर्ण इन्द्रियकृत दोषोंका वारण करती है, इससे वह 'वरणा' है और समस्त इन्द्रियजनित पापोंका नाश करती है, इससे वह 'नाशी' कहलाती है।

प्रश्न—इस अविमुक्तक्षेत्रका आध्यात्मिक स्थान कौन है?

उत्तर—भौंहों और नासिकाकी जो सन्धि है (जहाँ इडा और पिङ्गला नामकी दो नाडियाँ मिली हुई हैं), वह द्युलोक तथा उससे भी उत्कृष्ट ज्योतिर्मय परमधामकी सन्धिका स्थान है। निश्चय ही ब्रह्मवेत्ता पुरुष इस सन्धिकी ही 'सन्ध्या' के रूपमें उपासना करते हैं। अतः उस अव्यक्त परमात्मा श्रीरामकी अविमुक्त क्षेत्रमें रहकर अविमुक्तमें (भौंहों और नासिकाकी सन्धिमें) ही उपासना करनी चाहिये। जो उसे इस प्रकार जानता है अर्थात् जो ऊपर बताये अनुसार यह भलीभाँति समझता है कि 'अव्यक्त परमात्माकी उपासनाका आधिभौतिक स्थान अविमुक्तक्षेत्र (काशी) और आध्यात्मिक स्थान भौंहों एवं नासिकाके मध्यका भाग है—यहीं ध्यानद्वारा उस अव्यक्त तत्त्वका चिन्तन करना चाहिये', वही परमात्मासे नित्य सम्बद्ध (अविमुक्त) ज्ञानका उपदेश कर सकता है। यह अविनाशी, अनन्त, अव्यक्त, परिपूर्णानन्दैक-चिन्मयविग्रह परमात्मा अविमुक्तक्षेत्रमें प्रतिष्ठित है।

इसके बाद याज्ञवल्क्यजीने अत्रि मुनिसे यह कथा कही—

एक समय भगवान् शङ्करने काशीमें एक हजार मन्वन्तरतक जप, होम और पूजन आदिके द्वारा श्रीरामकी आराधना करते हुए श्रीराम-मन्त्रका जप किया। इससे प्रसन्न होकर भगवान् श्रीरामने शङ्करजीसे कहा—'परमेश्वर! तुम्हें जो अभीष्ट हो, वह वर माँग लो; मैं उसे दूँगा।' तब सत्यानन्दचिन्मय भगवान् शङ्करने श्रीरामसे कहा—'भगवन्! मणिकर्णिका तीर्थमें, मेरे काशीक्षेत्रमें अथवा गङ्गामें या गङ्गाके तटपर जो प्राण त्याग करता है, उस जीवको आप मुक्ति प्रदान कीजिये। इसके सिवा दूसरा कोई वर मुझे अभीष्ट नहीं है।'

तब भगवान् श्रीरामने कहा—'देवेश्वर! तुम्हारे इस पावन क्षेत्रमें जहाँ कहीं भी प्राण त्याग करनेवाले कीड़े-मकोड़े आदि भी तत्काल मुक्त हो जायँगे, इसमें कोई संशय नहीं है। तुम्हारे इस अविमुक्तक्षेत्रमें सब लोगोंकी मुक्ति-सिद्धिके लिये मैं पाषाणकी प्रतिमा आदिमें सदा निवास करता रहूँगा। शिवजी! इस काशीधाममें मेरे इस षडक्षर तारक-मन्त्र (**रां रामाय नमः**) द्वारा जो भक्तिपूर्वक मेरी पूजा करेगा, मैं उसे ब्रह्महत्या आदि पापोंसे मुक्त कर दूँगा; तुम चिन्ता न करो। तुमसे अथवा ब्रह्माजीके मुखसे जो यहाँ षडक्षर-मन्त्रकी दीक्षा लेते हैं, वे जीते-जी तो मन्त्रसिद्ध होते हैं और मृत्युके बाद जन्म-मरणसे मुक्त हो मुझे प्राप्त कर लेते हैं। शिवजी! जिस किसी भी मरणासन्न प्राणीके दाहिने कानमें तुम स्वयं मेरे मन्त्रका उपदेश करोगे, वह निश्चय ही मुक्त हो जायगा।'

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीके द्वारा वरदानसे अनुगृहीत अविमुक्तक्षेत्रका जो दर्शन करता है, वह जन्मान्तरके दोषोंको दूर कर देता है तथा वह जन्मान्तरके पापोंका नाश कर डालता है॥ ४॥

तदनन्तर उन प्रसिद्ध याज्ञवल्क्यजीसे भरद्वाजने पूछा—'भगवन्! किन मन्त्रोंद्वारा स्तुति करनेपर भगवान् श्रीराम प्रसन्न होते हैं और अपने स्वरूपका प्रत्यक्ष दर्शन कराते हैं? उन मन्त्रोंका आप हमें उपदेश करें।'

तब वे प्रसिद्ध महर्षि याज्ञवल्क्यजी बोले—'ब्रह्मन्! जिस प्रकार भगवान् शङ्करको वरदान देते हुए श्रीरामजीने काशीका महत्त्व बताया था, उसी प्रकार किसी समय ब्रह्माजीको भी उन्होंने वैसा ही उपदेश दिया था। उनके द्वारा ऐसा उपदेश पाकर ब्रह्माजीने निम्नाङ्कित गद्यमयी गाथासे उन्हें नमस्कार किया।

जो सम्पूर्ण विश्वके आधार और महाविष्णुरूप हैं, रोग-शोकसे रहित नारायण हैं, परिपूर्ण आनन्द-विज्ञानके आश्रय हैं और परम प्रकाशरूप हैं, उन परमेश्वर श्रीरामका मन-ही-मन स्तवन करते हुए ब्रह्माजीने उनकी इस प्रकार स्तुति की—

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवानद्वैतपरमानन्दात्मा यत् परं ब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चाखण्डैकरसात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च ब्रह्मानन्दामृतं भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यत् तारकं ब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो ब्रह्मा विष्णुरीश्वरो यः सर्वदेवात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ५॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये सर्वे वेदाः साङ्गाः सशाखाः सपुराणा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ६॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो जीवात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ७॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सर्वभूतान्तरात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ८॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये देवासुर-मनुष्यादिभावा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ९॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये मत्स्यकूर्माद्यवतारा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १०॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च प्राणो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ११॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् योऽन्तः-करणचतुष्टयात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १२॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च यमो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १३॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चान्तको भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १४॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च मृत्युर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १५॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्चामृतं भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १६॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यानि पञ्चमहाभूतानि भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १७॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः स्थावरजङ्गमात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १८॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च पञ्चाग्नयो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ १९॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् याः सप्तमहाव्याहृतयो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २०॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या विद्या भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २१॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या सरस्वती भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २२॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या लक्ष्मीर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २३॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या गौरी भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २४॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या जानकी भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २५॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च त्रैलोक्यं भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २६॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सूर्यो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २७॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सोमो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २८॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यानि च नक्षत्राणि भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ २९॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च नवग्रहा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३०॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चाष्टौ लोकपाला भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३१॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चाष्टौ वसवो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३२॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये चैकादश रुद्रा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३३॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् ये च द्वादशादित्या भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३४॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यच्च भूतं भव्यं भविष्यद् भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३५॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च ब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्याप्नोति विराड् भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३६॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो हिरण्यगर्भो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३७॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् या प्रकृतिर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३८॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चोङ्कारो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ३९॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्चतस्रोऽर्द्धमात्रा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४०॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः परमपुरुषो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४१॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च महेश्वरो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४२॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यश्च महादेवो भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४३॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् य ओं नमो भगवते वासुदेवाय यो महाविष्णुर्भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४४॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः परमात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४५॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यो विज्ञानात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४६॥

ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यः सच्चिदानन्दैकरसात्मा भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः॥ ४७॥

ॐ जो जगत्-प्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय ही भगवान् (षड्विध* ऐश्वर्यसे सम्पन्न)हैं, अद्वितीय परमानन्दस्वरूप हैं। जो सर्वोत्कृष्ट ब्रह्म तथा भूर्भुवः स्वः—ये तीनों लोक हैं, वह सब भी वे ही हैं; उन श्रीरामचन्द्रजीको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सर्वत्र विख्यात श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय ही भगवान् हैं तथा जो अखण्डैकरसस्वरूप परमात्मा एवं भूः, भुवः, स्वः—ये तीनों लोक हैं, वह सब भी वे ही हैं। निश्चय ही उन्हें मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे निश्चय ही भगवान् हैं तथा जो आनन्दमय, अमृतमय ब्रह्म तथा भूः आदि तीनों लोक हैं, वह सब भी उन्हींका स्वरूप है। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो तारक ब्रह्म और भूः, भुवः, स्वः नामसे प्रसिद्ध तीनों लोक हैं, वह सब कुछ उन्हींका स्वरूप है। उन

* सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण यश, सम्पूर्ण श्री, सम्पूर्ण ज्ञान और सम्पूर्ण वैराग्य—इन छःका नाम भग है। जिन पूर्णतम परमेश्वरमें ये छहों परिपूर्णरूपसे नित्य-निरन्तर स्थित रहते हैं, वे 'भगवान्' कहे गये हैं।

भगवान् श्रीरामको मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं, जो सर्वदेवमय परमात्मा हैं और जो भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो अङ्गोंसहित सम्पूर्ण वेद, उनकी शाखाएँ, पुराण तथा भूः आदि तीनों लोक हैं, उन सबके रूपमें भी वे ही हैं। उन भगवान्‌को निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं, तथा जो जीवात्मा और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान्‌को निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो सम्पूर्ण प्राणियोंका अन्तरात्मा और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो देवता, असुर और मनुष्य आदि भाव (जातियाँ) तथा भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो मत्स्य, कच्छप आदि अवतार और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। निश्चय ही उन भगवान् श्रीरामको मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो प्राण और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार—इन चार प्रकारके अन्तःकरणोंमें अवस्थित चेतन आत्मा और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे सब भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो यम और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो 'अन्तक' एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो मृत्यु एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है॥ १—१५॥

'ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो अमृत एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो पाँच महाभूत और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो स्थावर-जङ्गमके आत्मा (अथवा चराचरस्वरूप) एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो आहवनीय आदि पाँच अग्नि एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो भूः आदि सात महाव्याहृतियाँ और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो विद्या तथा भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो सरस्वती और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो लक्ष्मी एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी

उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो गौरी एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो भगवती जनकनन्दिनी एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो भगवान् हैं तथा जो त्रिलोकी—भूः, भुवः और स्वः है, वह सब भी उन्हींका स्वरूप है। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो सूर्यदेव और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो चन्द्रमा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो नक्षत्रगण एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो नवग्रह और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है॥ १६—३० ॥

'ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो आठ लोकपाल और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो आठ वसु और भूः-भुवः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो ग्यारह रुद्र और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो बारह आदित्य और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो भूत, वर्तमान और भविष्यकाल एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो विराट् परमेश्वर इस ब्रह्माण्डके भीतर-बाहर व्याप्त हैं, वे और भूः आदि तीनों लोक भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो प्रकृति एवं **भूः-भुवः** आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो ॐकार और भूः-भुवः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो चार अर्धमात्राएँ और भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो परम पुरुष एवं **भूः-भुवः** आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं; तथा जो महेश्वर और **भूः-भुवः-स्वः**—तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो

महादेव एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' इस द्वादशाक्षर-मन्त्रसे नमस्कार करनेयोग्य महाविष्णु एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो परमात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो विज्ञानात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है। ॐ जो सुप्रसिद्ध श्रीरामचन्द्रजी हैं, वे अवश्य ही भगवान् हैं तथा जो सच्चिदानन्दैक-रसात्मा एवं भूः आदि तीनों लोक हैं, वे भी उन्हींके स्वरूप हैं। उन भगवान् श्रीरामको निश्चय ही मेरा बारम्बार नमस्कार है'॥ ३१—४७॥

जो ब्रह्मवेत्ता इन (मन्त्रराजके ४७ अक्षरोंके अनुसार) सैंतालीस मन्त्रोंसे प्रतिदिन भगवान् श्रीरामका स्तवन करता है, उसके ऊपर इस स्तुतिसे भगवान् प्रसन्न होते हैं। अतः जो इन मन्त्रोंसे प्रतिदिन भगवान्‌की स्तुति करता है, वह भगवान्‌का प्रत्यक्ष दर्शन करता है; वह अमृतत्वको प्राप्त होता है, वह अमृतत्वको प्राप्त होता है॥ ५॥

तदनन्तर, भरद्वाजने याज्ञवल्क्यकी सेवामें उपस्थित होकर प्रार्थना की—'भगवन्! श्रीराम-मन्त्रराजके माहात्म्यका वर्णन कीजिये।'

तब उन प्रसिद्ध महात्मा याज्ञवल्क्यने कहा—

स्वयंप्रकाश, परम ज्योतिर्मय तथा केवल अपने ही अनुभवद्वारा गम्य अद्वितीय चिन्मात्रस्वरूप जो परमात्मा है, वही श्रीरामचन्द्रजीके षडक्षर-मन्त्रका प्रथम अक्षर ('**रां**' बीज) माना गया है। मन्त्रका मध्यभाग जो '**रामाय**' पद है, वह अखण्डैकरसानन्दस्वरूप तारक ब्रह्मका वाचक है; उसे सच्चिदानन्दस्वरूप ही समझना चाहिये। मन्त्रका अन्तिम भाग जो '**नमः**' पद है, उसे भी पूर्णानन्दैकविग्रह परमात्मस्वरूप ही जानना चाहिये। सम्पूर्ण देवता और मुमुक्षु पुरुष सदा अपने हृदयमें उसको नमन करते रहते हैं।

जो श्रीरामचन्द्रके इस षडक्षर मन्त्रराज ('**रां रामाय नमः**')-का प्रतिदिन नियमपूर्वक जप करता है, वह अग्निमें तपाकर शुद्ध किया हुआ हो जाता है। वह वायु, सूर्य, चन्द्रमा, ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र देवताके द्वारा भी पवित्र कर दिया जाता है। वह सम्पूर्ण देवताओंके द्वारा 'ब्रह्मवेत्ता' रूपसे ज्ञात होता है। वह मानो सम्पूर्ण यज्ञोंके द्वारा भगवान्‌का यजन कर लेता है। उसके द्वारा इतिहास-पुराणोंका तथा रुद्र-मन्त्रोंका लक्ष बार जप सम्पन्न हो जाता है और उसका फल भी उसे मिलता है। प्रणवका तो मानो वह सौ अरब जप कर लेता है। वह अपने पूर्वकी तथा भावी दस-दस पीढ़ियोंको पवित्र कर देता है। वह (समस्त पापोंसे छूटकर) पङ्क्ति-पावन बन जाता है। वह महान् हो जाता है और वह अमृतत्वको प्राप्त होता है।

॥ अथर्ववेदीय श्रीरामोत्तरतापनीयोपनिषद् समाप्त॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!